एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 04, अंक: 06 (नवंबर-दिसंबर, 2024)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

गेहूं की वैज्ञानिक खेती: उत्पादन बढ़ाने की कुंजी

(कार्तिकेय तिवारी[1], रवि गोपाल[2], प्रियंका प्रिया[3] एवं *मुरारी मोहन[4])
[1]टेक्निकल मार्केट डेवलपमेंट एक्जीक्यूटिव (टी.एम.डी.-सी.पी.डी.), सिजेंटा इंडिया प्राइवेट लिमिटेड
[2]एम.एससी.(कृषि) बागवानी, जे.एस विश्वविद्यालय, शिकोहाबाद, फ़िरोज़ाबाद, उ.प्र.
[3]एम. एससी. (कृषि) कृषि विज्ञान, नैनी कृषि संस्थान, शुआट्स, प्रयागराज, उ.प्र.-211007
[4]एम.एससी. (कृषि) कृषि विज्ञान, नैनी कृषि संस्थान, शुआट्स, प्रयागराज, उ.प्र.-211007
*संवादी लेखक का ईमेल पता: murarimohan85@gmail.com

भारत में गेहूं (*ट्रिटिकम एस्टिवम*) एक प्रमुख खाद्यान्न फसल है, जिसे मुख्य रूप से रबी मौसम में उगाया जाता है। बढ़ती जनसंख्या और खाद्य सुरक्षा के लिए गेहूं का उत्पादन बढ़ाना अत्यंत महत्वपूर्ण है। वैज्ञानिक खेती की तकनीकों का पालन करके किसान अपनी उपज को न केवल बढ़ा सकते हैं, बल्कि उत्पादन लागत भी कम कर सकते हैं।

उन्नत किस्मों का चयन

उपज बढ़ाने के लिए क्षेत्रीय जलवायु और मिट्टी के अनुसार उन्नत किस्मों का चयन करना आवश्यक है।

उत्तर भारत के लिए: एचडी 2967, एचडी 3086, डब्ल्यूएच 1105

मध्य भारत के लिए: एमपी 1201, एमपी 4010

दक्षिण भारत के लिए: एनआईएडब्ल्यू 34, डीबीडब्ल्यू 93

इन किस्मों में अधिक पैदावार, रोग प्रतिरोधक क्षमता और खराब मौसम को सहन करने की क्षमता होती है।

मिट्टी की तैयारी

मिट्टी परीक्षण: मिट्टी की उर्वरता और पीएच स्तर की जांच करवाएं।

जुताई और समतलता: गहरी जुताई करें ताकि मिट्टी नरम और जल संचय के लिए अनुकूल हो।

कार्बनिक खाद: मिट्टी में 10-15 टन प्रति हेक्टेयर गोबर की खाद डालें।

बीज का प्रबंधन

बीज उपचार: बीज बोने से पहले फफूंदनाशक (थायरम 2 ग्राम/किग्रा) और कीटनाशक (इमिडाक्लोप्रिड 1 ग्राम/किग्रा) से उपचार करें।

बीज की मात्रा: 100-120 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर।

बीज बोने का समय

सिंचित क्षेत्रों में: नवंबर के पहले सप्ताह।

असिंचित क्षेत्रों में: अक्टूबर के अंतिम सप्ताह।

सिंचाई और जल प्रबंधन

पहली सिंचाई: बुवाई के 20-25 दिन बाद।

महत्वपूर्ण चरण: तिल फूल आने और दूधिया अवस्था में सिंचाई जरूरी है।

जल निकासी: खेत में जलभराव से बचें।

खाद और उर्वरक प्रबंधन

नाइट्रोजन (एन): 120 किग्रा/हेक्टेयर।

50% बुवाई के समय और शेष 50% टॉप ड्रेसिंग के रूप में।

फास्फोरस (पी): 60 किग्रा/हेक्टेयर।

पोटाश (के): 40 किग्रा/हेक्टेयर।

रोग और कीट प्रबंधन

पीला रतुआ: मैनकोज़ेब या प्रोपिकोनाज़ोल का छिड़काव करें।

थ्रिप्स और एफिड: इमिडाक्लोप्रिड का उपयोग करें।

जंग रोग: जिंक और सल्फर की कमी को पूरा करें।

कटाई और भंडारण

कटाई का समय: जब दाने कठोर और नमी 20% हो।

थ्रेसिंग: आधुनिक थ्रेसर का उपयोग करें।

भंडारण: साफ और सूखे गोदामों में भंडारण करें।

निष्कर्ष

वैज्ञानिक विधियों को अपनाने से गेहूं की उपज में 20-30% की वृद्धि हो सकती है। इसके लिए आधुनिक तकनीकों और उन्नत प्रबंधन पर ध्यान देना आवश्यक है। सही समय पर उन्नत किस्मों का चयन, उचित उर्वरक प्रबंधन, सिंचाई और रोग नियंत्रण से किसान अपनी आय को बढ़ा सकते हैं और खाद्य सुरक्षा में योगदान दे सकते हैं।